Q. एक शासक के रूप में मुहम्मद बिन तुगलक का मूल्यांकन करें ?

Ans

मुहम्मद बिन तुगलक अपने पिता की हत्या कर मार्च, 1325 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। मध्यकालीन सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सबसे अधिक शिक्षित, विद्वान और योग्यतम व्यक्ति था। वह एक ओर कुशल कवि तथा ललित कला प्रेमी था, तो दूसरी ओर तर्क, गणित, दर्शन तथा भौतिक शास्त्र का ज्ञाता था। लेकिन मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र के उज्ज्वल पक्ष के साथ-साथ उसका अंधकारमय पक्ष भी था। उसमें सामान्य स्थिर बुद्धि, व्यावहारिक निर्णय, धैर्य तथा संतुलन का अभाव था। यहां तक कि वह दूसरे अनुभवी व्यक्तियों और अधिकारियों का परामर्श भी नहीं लेता था। वह झूठी हठी और अपनी धुन का पक्का था। वह मनुष्य के गुणों का अच्छा पारखी नहीं और समय की नाड़ी जानने की उसमें क्षमता नहीं था।

राजधानी परिवर्तन (1326-27) की योजना। मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रयोग था। दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया। ~~ईश तक~~ मुहम्मद तुगलक का राजधानी दौलताबाद ले जाने का प्रमुख कारण दिल्ली सल्तनत काफी विस्तृत हो गया था। दौलताबाद साम्राज्य के मध्य में था।

सुल्तान ने दिल्ली के नागरिकों को अपनी सम्पत्ति तथा परिवार के साथ दौलताबाद जाने का आदेश दिया जो व्यक्ति उसकी आज्ञा को मानकर दौलताबाद जाने को तैयार हो गये, उसकी जमीन जायदाद सुल्तान ने खरीद ली और नगद धनराशि प्रदान की। चूंकि दिल्ली से दौलताबाद 750 किलोमीटर है, इसलिए सुल्तान ने पक्की सड़क का निर्मा० करवाया। दौलताबाद में सुन्दर भवनों का निर्माण करवाया। तथा बड़े-बड़े अमीरों, विद्वानों, सन्त महात्मा आदि को बसाने का उपाय किया। नयी राजधानी दौलताबाद का निर्माण कर सुल्तान ने अपना अधिकार

कुछ लोग दिल्ली स्वेच्छा से नहीं छोड़ना चाहते थे।
इसलिए सुल्तान ने उनके साथ कठोर बर्ताव कर जबरन दौलताबाद भेजा। दौलताबाद जाने के क्रम में अमीरों, अधिकारियों व प्रजा के कुछ व्यक्तियों का मार्ग में ही प्राण निकल गये और बहुत लोग दौलताबाद पहुँच कर मर गये। दौलताबाद की जलवायु भी उन्हें हितकर प्रतीत नहीं हुई।

जब सुल्तान को लोगों के कष्टों का पता चला तो उसने उन सभी व्यक्तियों को पुनः लौट जाने की आज्ञा दे दी, जो इसके लिए इच्छुक थे। उसने उदारतापूर्वक उनकी क्षति की पूर्ति की और उन्हें सहायता दी। सुल्तान को इस कार्य से बहुत बदनामी मिली, प्रजा में इसके असन्तोष फैला। इससे राज्यकोष रिक्त हो गया और बाद में अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

भारतीय मुद्रा के इतिहास में मुहम्मद तुगलक के शासन का महत्वपूर्ण स्थान है। उसे मुद्रा ढालने वालों का राजा, कहा गया है। उसने सम्पूर्ण मुद्रा-प्रणाली में सुधार लाये, बहुमूल्य धातुओं के अपेक्षित-मूल्य निश्चित किये और अनेक प्रकार के सिक्के जारी किये। ये सिक्के कलापूर्ण डिजाइनों के लिए प्रसिद्ध थे, उसने प्रचलित मुद्राओं के रूप और आकार आकर्षक बना दिया। उसने सोने चाँदी के स्थान पर ताँबे और पीतल के सिक्के प्रचलित किये। इसे ही सांकेतिक मुद्रा कहा जाता है। इसका मूल्य सोना-चाँदी के समकक्ष रख दिया। और कानूनी मुद्रा घोषित कर दिया। कुछ दिन तो सारी व्यवस्था ठीक-ठाक चली, किंतु बाद में गड़बड़ी बढ़ने लगी। लोगों ने सोने-चाँदी के सिक्कों को छिपा लिया। अब चारों ओर ताँबे के सिक्के छा गए। जब सुल्तान ने

ने देखा कि उसकी एक प्रिय योजना असफल हो रही है तो उसने तांबे के सिक्के को अवैध घोषित कर दिया। अपनी प्रजा को शीघ्र तांबे के सिक्का को राज-कोष में जमा करके बदले में चांदी के सिक्के ले जाने का आदेश दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक प्रजा का घर सोने-चांदी से भर गया तथा राज्यकोष खाली हो गया।

जहां तक मुहम्मद तुगलक की अन्य योजनाओं का प्रश्न है उसने राज्य को आय-व्यय से संबंधित आंकड़ों को इकट्ठा किया और उन्हें बही-खाते में सुरक्षित रखा गया। इससे प्रशासनिक कार्यों में काफी सहुलियत हुई।

1326-27 ई० में राजस्व वृद्धि के उद्देश्य से तथा दोआब क्षेत्र के हिन्दू प्रधानों के ऊपर समुचित नियंत्रण स्थापित करने के निमित्त सुल्तान ने वहाँ भूमि-कर को बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया। उसकी यह योजना भी असफल हो गयी। उन दिनों दोआब क्षेत्र में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी अतः जनता बढ़ा हुआ कर क्या देती परम्परागत कर देना भी उनके लिए कठिन हो गया। अतः क्षेत्र में छिट-फुट विद्रोह भी हो गये। सम्भवतः सुल्तान को इस स्थिति का आभास नहीं था। यही कारण है कि जैसे ही उसे इस स्थिति का पता चला उसने अपने आदेश तुरंत वापस ले लिए, सामान्य कर भी माफ कर दिये और राहत के कार्य शुरू कर दिये। पर सब कुछ देर से हुआ। इस योजना की असफलता से सुल्तान को केवल बदनामी मिली।

कृषि उत्पादन में वृद्धि के उद्देश्य से सुल्तान ने दिवान-ए-कोही की स्थापना की तथा दिल्ली के पास एक आदर्श कृषि-फार्म स्थापित किए।

Scanned with CamScanner

दुर्भाग्यवश यह योजना भी असफल रही। योजना की असफलता के पीछे बंजर जमीन का चुनाव, सुल्तान की अधीरता तथा अधिकारियों के भ्रष्टाचार का हाथ था इससे सुल्तान को धन की काफी हानि हुई।

मुहम्मद तुगलक की विदेशनीति भी असफल रही। ईरान ओ खुरासान को जीतने की महत्वाकांक्षा तथा इसके लिए विशाल सेना की स्थापना, सुल्तान की अदूरदर्शिता तथा गलत महत्वाकांक्षा का परिणाम है। इससे धन-जन की अपार हानि हुई। सुल्तान का प्रस्तावित चीनी अभियान भी धन-जन की दृष्टि से हानिकारक सिद्ध हुआ सुल्तान की दक्षिण नीति भी असफल सिद्ध हुई।

इन योजनाओं की असफलता के बावजूद इसमें मुहम्मद तुगलक की बुद्धिमता का पूर्ण परिचय मिलता। उसकी ये योजनाएं असफल इसीलिए हुई कि उसे प्रजा का सहयोग प्राप्त नहीं हो सका। डा० मेहदी हुसैन ने लिखा है " एक अनुभवहीन डा० की तरह उसने अपने राज्य रूपी शरीर से दूषित रक्त निकालने के लिए अनेक ऑपरेशन किए, परन्तु रोग बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की।" इसी प्रकार कुछ इतिहास के विद्वानों ने उसको पागल बादशाह भी कहा। लेकिन सच्चाई यह नहीं है। वह अपने समय से आगे था, केवल यही दोष उनकी योजनाओं के आधार पर सिद्ध होता है।

उसकी सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि वह किसी भी कार्य को धैर्य के साथ नहीं करता था। उसकी असफलता के लिए बहुत सीमा तक उसके उतावलापन भी जिम्मेदार माना जा सकता है भाग्य ने भी उसे धोखा दिया वस्तुत: उसके चरित्र में विरोधी गुणों का सम्मिश्रण था जिससे वह आकस्मि असफल सिद्ध हुआ